शोध-सारांश

‘नागार्जुन की राजनीतिक कविताएँ: जे. पी. आंदोलन’

(विशेष संदर्भ: खिचड़ी विप्लव देखा हमने)

शोषित-पीड़ित, मेहनतकश आवाम के प्रतिनिधि कवि नागार्जुन का पूरा जीवन वास्तविक मुक्ति की जन आकांक्षा की समरगाथा रहा है। सत्ता सुख भोगने वाले राजनेताओं को अपने व्यंग्यवाण से बेधने में बाबा को जो महारथ हासिल है, वह अन्य किसी को नहीं। कवि के व्यंग्यवाण से सत्ता की शिखर पर विराजने वाले जवाहर लाल नेहरू, इंदिरा गांधी, मोरारजी देसाई जैसे कोई नेता शायद ही बच पाया हो। दरअसल कवि की राजनीतिक कविता में व्यंग्यों के बेजोड़ दृश्य मिलते हैं। इसीलिए सुप्रसिद्ध आलोचक नामवर सिंह ने कवि के पैने व्यंग्यों के बारे में कहा, “यह निर्विवाद है कि कबीर के बाद हिंदी कविता में अभी तक नागार्जुन से बड़ा व्यंग्यकार कोई नहीं हुआ।”

खासकर आठवें दशक के हर जुल्म के खिलाफ हो रहे जनसंघर्ष को बाबा ने अपनी कविता में बड़ी बेबाकी के साथ उजागर किया है। उनका ‘खिचड़ी विप्लव देखा हमने’ काव्य-संग्रह आठवें दशक की लिखी गई कावताओं का संकलन है। इन कविताओं में देश की विभिन्न घटनाओं, आंदोलनों, हलचलों, टकराहटों, सत्ता-परिवर्तनों, दमन-जुर्म और अनेक सामाजिक-राजनीतिक प्रतिरोधों की जीवंत तस्वीर खींची गई है। सत्ता के विपक्ष में लिखी गई ये कविताएं शोषित-पीड़ित जनता की महागाथा है। दरअसल जनकवि की प्रतिबद्धता आजीवन बहुजन समाज के प्रति बनी रही।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के प्रथम अध्याय- ‘आठवें दशक का युगबोध और प्रगतिशील हिंदी कावता’ में आठवें दशक के सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक, धार्मिक युगबोधों की चर्चा की गई है, साथ ही इस दशक की प्रगतिशील हिंदी कविताओं के स्वरूप की संक्षिप्त विवेचना की गई है। द्वितीय अध्याय- ‘नागार्जुन का राजनीतिक बोध’ में नागार्जुन की राजनीतिक चेतना का विश्लेषण किया गया है। तृतीय अध्याय- ‘जे. पी. आंदोलन की दशा एवं दिशा’ में जय प्रकाश नारायण के जीवन-संघर्ष तथा जे. पी. आंदोलन के विराट परिदृश्य को दिखाया गया है। चतुर्थ अध्याय- ‘जनकवि नागार्जुन और जे. पी. आंदोलन’ में नागार्जुन के ‘खिचड़ी विप्लव देखा हमने’ में संकलित कविताओं के माध्यम से कवि के जे. पी. आंदोलन के प्रति हुए मोहभंग का विश्लेषण किया गया है। साथ ही बाबा

के साक्षात्कार के माध्यम से जे. पी. आंदोलन-विरोधी तथा आंदोलन के समर्थन में दिए गए कथनों की जांच-पड़ताल की गई है।

दरअसल नागार्जुन ऐसी क्रान्ति के पक्षधर थे जिसमें बहुजन समाज की चिंता हो, उसमें आम जनता के उत्थान की लालसा हो। जे. पी. आंदोलन के समय नागार्जुन की यही चिंता देखने को मिलती है। जे. पी. आंदोलन के समय कवि को जहां लगा कि यह आंदोलन सर्वहारा के सुनहले भविष्य को लेकर आया है, वहाँ कवि ने बड़ी शिद्दत के साथ जे. पी. आंदोलन में अपनी भागीदारी निभाई। लेकिन जब आंदोलन का स्वरूप बदलने लगा, उसमें सत्ता-प्राप्ति की महत्वकांक्षाएँ बढ़ने लगीं तो कवि ने आंदोलन का पुरजोर विरोध किया। नागार्जुन सही मायने में राजनीतिक परिवर्तनों की लालसा के कवि हैं। उनकी कविताओं में परिवर्तनों की अद्भुत तड़प है। इस परिवर्तन की लालसा के पीछे कवि की अटूट जनसरोकारिता है। उनकी प्रथम और अंतिम शर्त जनपक्षधरता है। लोकतांत्रिक आंदोलनों में दबाव बनाने की जितनी भी कला हो सकती है, नागार्जुन ने अपनी राजनीतिक कविता में उससे ज्यादा कला का प्रयोग किया है। जब समाज में कवि को क्रान्ति की कोई सुगबुगाहट नहीं दिखाई पड़ती है तो वह कुव्यवस्था से खीझकर जन-जन में क्रान्ति के लिए ऊर्जा भरता है। नागार्जुन के मन में आजीवन एक 'समग्र क्रांति' की लालसा बनी रही। उन्होंने घूम-घूम कर समूचे भारतीय जनता की पीड़ा को बहुत करीब से महसूस किया, साथ ही उन्हें एक सूत्र में बांधने का भी भरपूर कार्य किया।

बहरहाल आज भी राजनीति के नाम पर सरकार आम जनता का शोषण कर रही है। किसान, मजदूर, शोषित-पीड़ित जनता दमन की चक्की में पिस रही है। विकास के नाम पर सारी योजनाएँ हवा-हवाई हो रही हैं। इस विषम परिस्थिति में नागार्जुन जैसे जनकवि तथा भारतीय क्रांति के सहयात्री की परम आवश्यकता दिखाई पड़ती है। व्यवस्था की विसंगतियों का खुलकर पूरे दमखम के साथ विरोध करने के कारण नागार्जुन आज भी सर्वाधिक प्रासंगिक हैं।